त्रिशला फाउंडेशन

संद्रश्य प्रलेख

(विजन दश्तावेज)

लक्ष्य

मानसिक एवं शारीरिक दिव्यांगता, विशेषतः सेरेब्रल पालसी से प्रभावित सभी बच्चों को पुनर्वास की अत्याधुनिक सुविधा प्रदान कर समाज की मुख्य धारा में शामिल कराना।

परिचय

त्रिशला फाउंडेशन की स्थापना १२ अप्रैल २०१४ को हुई। फाउंडेशन की स्थापना का मुख्य उद्देश्य उन बच्चों के पुनर्वास और सामाजिक विकास के दायरे को बढ़ाना है, जो विभिन्न प्रकार की शारीरिक अक्षमता से प्रभावित हैं। फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ जितेंद्र कुमार जैन २००५ से बिना कोई सरकारी सहायता के दिव्यांगजनों के उत्थान की गतिविधियां संचालित करते आ रहे हैं। बाल अस्थि रोगों की नई चुनौतियों से निपटने और सेरेब्रल पालसी से प्रभावित बच्चों के सर्वांगीण पुनर्वास के कार्यक्रमों के विस्तार के लिए त्रिशला फाउंडेशन की स्थापना की गई। त्रिशला फाउंडेशन बिना किसी भेदभाव के सभी तरह की सामाजिक परिस्थिति से आए हुए बच्चों के पुनर्वास के लिए कार्यक्रम संचालित करता आ रहा है। फाउंडेशन अब तक अपने निर्धारित लक्ष्यों को हासिल करने में पूर्ण रूप से सफल रहा है। इससे प्रेरित होकर हम वर्तमान में इसके दायरे को और बढ़ाकर आधुनिक पुनर्वास केंद्र एवं अभिभावकों के रहने के लिए अधिक से अधिक अल्पकालिक आवास सुविधा के लिए योजनाबद्ध हैं।

सेरेब्रल पालसी क्या है?

सेरेब्रल पालसी मां के गर्भ, जन्म के समय एवं दो साल की उम्र तक अविकसित मस्तिष्क के किसी भी कारणवश क्षतिग्रस्त हो जाने के वजह से होता है। यह नसों, दिमाग एवं मांसपेशियों की समस्याओं का एक समूह होता है जिसमें बैठने-उठने, चलने की समस्याओं के साथ-साथ बोलने-सुनने, देखने, बार-बार बीमार होने और झटके आने की समस्याएं होती हैं। यह समस्या बच्चों में होने वाली दिव्यांगता का एक प्रमुख कारण है। यह मां के गर्भ में या जन्म के समय बच्चे के अविकसित मस्तिष्क को क्षति पहुंचने के कारण होती है। किसी प्रकार के संक्रमण, अनुवांशिक बीमारियों, तेज पीलिया या ऑक्सीजन की कमी की वजह से मस्तिष्क को क्षति हो सकती है। समय से बहुत पहले एवं दो किलोग्राम से कम वजन के जन्म लेने वाले बच्चों में सेरेब्रल पालसी होने की संभावना ज्यादा रहती है। यह बच्चे सामान्य बच्चों की तरह विकास नहीं कर पाते हैं। इन बच्चों को कम उम्र में ही कुछ लक्षणों को देखकर पहचाना जा सकता है। इन लक्षणों में समुचित विकास का न होना, मां-बाप को देखकर प्रतिक्रिया न देना, हाथ-पैर में अकड़पन या ढीला होना, अनियंत्रित गति होना, बैठने-उठने की समस्याएं, झटके आना, गर्दन का न रूकना, खाने-पीने मे समस्या एवं लार टपकना प्रमुख लक्षण होते हैं। ऐसे बच्चों में मस्तिष्क आघात पूर्णतया स्थाई होता है लेकिन दिव्यांगता की तीव्रता कई बातों पर निर्भर करती है। सेरेब्रल पालसी को पूरी तरह से ठीक नहीं किया जा सकता किंतु उनका प्रभाव कम करके एवं क्षमताओं का सदुपयोग करते हुए उन्हें समाज, स्कूल-कॉलेज में पुनर्वासित किया जा सकता है। यह देखा गया है कि शुरूआती दिनों में बेहतर पुनर्वास और इलाज की सुविधा प्रदान कर दी जाए तो अस्सी प्रतिशत से ज्यादा बच्चे सामान्य हो सकते हैं। ऐसे दिव्यांगजन पढ़ना-लिखना और सामान्य दिनचर्या के कार्य करते हुए एक लंबी उम्र जी सकते हैं। इन बच्चों को विभिन्न चिकित्सा एवं पुनर्वास विशेषज्ञों आदि की एक ही क्षत के नीचे जरूरत पड़ती है। सेरेब्रल पालसी लाइलाज है किंतु शिक्षा एवं प्रशिक्षण के जरिए सेरेब्रल पालसी जन को समाज की मुख्य धारा में जोड़ सकते हैं। सेरेब्रल पालसी से प्रभावित लोग, व्यावसायिक डिग्री हासिल कर नौकरी एवं रोजगार कर सकते हैं। इसके साथ ही वह शादी कर लंबी उम्र तक जीवन जी सकते हैं।

सेरेब्रल पालसी नवजात शिशु में तंत्रिका तंत्र की एक प्रमुख समस्या है। जीवित पैदा होने वाले एक हजार बच्चों में लगभग बच्चों के सेरेब्रल पालसी से प्रभावित होने की संभावना रहती है। पूरी दुनिया में एक करोड़ ७० लाख लोग सेरेब्रल पालसी से प्रभावित हैं। विकसित देशों में ऐसे बच्चों एवं व्यक्तियों के लिए संस्थागत देखभाल, सामाजिक सुरक्षा, एकीकृत शिक्षा, आधुनिक पुनर्वास की व्यवस्था, आंकड़ों का अनुरक्षण, विशेषज्ञों का लगातार प्रशिक्षण एवं अनुसंधान की सुविधाएं बहुत ही उच्चस्तरीय हैं।

भारत में लगभग तीस लाख बच्चे इस समस्या से प्रभावित हैं। इनमें से अधिकतर बच्चे सही जानकारी एवं समुचित अत्याधुनिक पुनर्वास की सुविधाओं के न होने की वजह से जीवनभर असहाय जीवन जीने को मजबूर हो जाते हैं। इनमें मंदबुद्धि केवल तीस से चालीस प्रतिशत बच्चों में होती है। समाज में यह माना जाता रहा है कि ऐसे प्रभावित व्यक्ति जीवन में कुछ कर नहीं पाएंगे और न ही सामान्य जीवन सीमा तक जीवित रह पाते हैं। जबकि इन बातों में कोई सच्चाई नहीं है। बहुत सारे बच्चों को सामान्य स्कूलों में प्रवेश नहीं मिल पाता है। इसके अलावा इलाज के लिए सही दिशा-निर्देश के न होने, पुनर्वास की अवधि लंबी होने, अत्याधुनिक केंद्रों व विशेषज्ञों की कमी, शोध एवं अत्याधुनिक इलाज के लिए जरूरी प्रशिक्षण न होना आदि समस्याओं की तीव्रता बढ़ा देते है।

वास्तव में यदि सेरेब्रल पालसी बच्चों को कम उम्र में ही अच्छी चिकित्सीय एवं पुनर्वास की सुविधा मिले तो अस्सी प्रतिशत से ज्यादा बच्चों का जीवन उत्कृष्ट एवं समाज की मुख्य धारा से जुड़ने योग्य हो सकता है। भारत में इन बच्चों के लिए समर्पित केंद्रों की कमी है। सीपी बच्चों में विभिन्न प्रकार की चिकित्सीय समस्याएं होती हैं जिनका प्रभाव जीवन पर्यंत रहता है। कुछ पारंपरिक थैरेपी एवं शल्य चिकित्सा का सहारा लेते हैं जो कि वास्तव में ऐसे बच्चों के लिए बहुत ही नुकसानदेह है। सीपी प्रभावित जन को लम्बे समय तक कई तरह के चिकित्सीय एवं पुनर्वास विशेषज्ञों द्वारा परामर्श एवं इलाज की आवश्यकता पड़ती है। जिसके कारण अभिभावकों को आर्थिक परेशानियों एवं मानसिक तनाव से गुजरना पड़ता है। इसलिए एक ऐसे स्थान की आवश्यकता थी जहां पर हम उन्हें सभी तरह की चिकित्सीय एवं पुनर्वास की सुविधा के साथ-साथ अभिभावकों के लिए अल्पकालिक आवास की सुविधा दे सकें। जिससे उन्हें अनावश्यक तनाव से मुक्ति मिल सके। समस्याओं के निदान और सीपी बच्चों के समुचित विकास की योजनाओं को गति देने के लिए त्रिशला फाउंडेशन की जरूरत महसूस की गयी।

डॉ जितेंद्र कुमार जैन, अध्यक्ष एवं संस्थापक

- पीजीआई चंडीगढ़ से एमएस आर्थो एवं राष्ट्रीय अकादमी चिकित्सा विज्ञान, नई दिल्ली से डीएनबी आर्थोपेडिक्स।
- सचिव एवं संस्थापक ट्रस्टी, संवेदना ट्रस्ट।
- डॉ जैन ने पूरे भारत वर्ष का दौरा कर ६० कांफ्रेंस, भारत व बाहर के देशों में ३० आधुनिक प्रशिक्षण प्रोग्राम में शामिल।

१२ राज्यों में २२ वर्कशॉप, सीएमई एवं १४२ जागरूकता शिविरों का आयोजन एवं प्रेस वार्ता की। इससे दिव्यांग बच्चों को सही इलाज की जानकारी मिली। उपरोक्त गतिविधियां बिना किसी सरकारी या गैर सरकारी मदद के निःस्वार्थ समाजसेवा की।

१५ पत्रिकाओं एवं ३० स्वास्थ्य पत्रिकाओं में उनके शोधपत्र प्रकाशित हुये। इन्होंने लगभग ५० राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय सभाओं में बाल अस्थि रोगों और सेरेब्रल पालसी की विभिन्न समस्याओं पर अपने विचार व्यक्त किए।

डॉ जैन को भगवान दास मेमोरियल अवार्ड (2001), प्रयाग गौरव सम्मान (2011, 2015 & 2016), और इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा 26th Jan 2016, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा राज्य सम्मान २०१४ एवं संस्थागत सम्मान के तहत संवेदना ट्रस्ट को २०१२ में सम्मानित किया गया।

डॉ जैन ने बाल अस्थि रोगों विशेषतः सेरेब्रल पालसी के प्रति स्वयं को समर्पित कर दिया। पिछले १५ वर्षों में डॉ जैन ने लगभग पचास हजार सीपी एवं अस्थि समस्याओ के बच्चों का समुचित इलाज एवं पुनर्वास करने में सफलता हासिल की।

डॉ जैन के सामाजिक योगदान की राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय समाचार माध्यमों के द्वारा सराहनी मिली है। उन्होंने अपना पूरा जीवन सेरेब्रल पालसी के प्रति समर्पित कर दिया है।

डॉ वारिदमाला जैन, सचिव

- एमडी कम्युनिटी मेडिसिन, मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज, इलाहाबाद। सेरेब्रल पालसी के विभिन्न सामाजिक एवं चिकित्सीय पहलुओं पर पीएचडी।
- इन्होंने शियाट्स के स्वास्थ्य विज्ञान विभाग में बतौर सहायक प्रोफेसर (2004-16) कार्य किया। मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज, इलाहाबाद के कम्युनिटी मेडिसिन विभाग में भी बतौर सहायक प्रोफेसर कार्य करने का अनुभव है।
- डॉ वारिदमाला संवेदना ट्रस्ट की स्थापना काल से ट्रस्टी और सक्रिय समाजसेविका हैं। इन्होंने इन बच्चों के लिए अपनी सरकारी नौकरी को छोड़ दिया।
- संवेदना एवं त्रिशला फाउंडेशन की शैक्षणिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का सभी कार्य इन्हीं के निर्देशन में होता है।

कोषाध्यक्ष
श्री आलोक सिंह,
जेल उप अधिकारी, उ.प्र. प्रशासन एवं सुधार विभाग
उत्तर प्रदेश

न्यासी एवं मुख्य सलाहकार
प्रो ए एन वर्मा,
वरिष्ठ अस्थि रोग विशेषज्ञ,
पूर्व विभागाध्यक्ष, अस्थि रोग विभाग, मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज, इलाहाबाद।

न्यासी
श्री रमाशंकर श्रीवास्तव,
वरिष्ठ पत्रकार, हिंदी दैनिक 'आज' इलाहाबाद।३३ साल से पत्रकारिता में सक्रिय।

न्यासी
श्री शैलेंद्र सिंह, अध्यक्ष संगम ट्रांसपोर्ट एवं संगम हाउसिंग बोर्ड इलाहाबाद। परिवहन एवं गृह निर्माण व्यवसाय में 20 वर्ष से सक्रिय।

प्रबंधन मंडल

- श्री सी एस सिंह।
- श्री दिलीप मिश्रा।
- श्री वैभव शुक्ला।
- श्री सचिन शुक्ला।
- श्री प्रदीप शुक्ला।

मार्गदर्शक मंडल

- श्री देशराज मिश्रा, 'गुरूजी', इलाहाबाद उत्तर प्रदेश।
- संत करनैल सिंह, इंग्लैण्ड।
- न्यायाधीश श्री बी.सी. कान्डपाल, पूर्व मुख्य न्यायाधीश, उत्तराखण्ड
- डॉ मिलन मुखर्जी, वरिष्ठ चिकित्सक, अध्यक्ष प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद उत्तर प्रदेश।
- श्री खिल्लीमल जैन, पूर्व कमिश्नर दिव्यांगता, राजस्थान सरकार, अलवर राजस्थान।
- डॉ संदीप मलहोत्रा, इलाहाबाद उत्तर प्रदेश।
- डॉ कविता अग्रवाल,इलाहाबाद उत्तर प्रदेश।
- श्री शिवनंदन गुप्ता, भारत विकास परिषद, इलाहाबाद उत्तर प्रदेश।
- श्री कमलाकांत पांडेय, एक्जिक्युटिव मेंबर सक्षम इलाहाबाद उत्तर प्रदेश।
- श्री बीआर शर्मा, पंचकुला हरियाणा।
- डॉ मोहम्मद कदीर, इलाहाबाद उत्तर प्रदेश।

समाजसेवी एवं सहयोगी कार्यकर्ता

- श्री अमित गुप्ता, अमित कंस्ट्रक्शन लिमिटेड, इलाहाबाद उत्तर प्रदेश।
- डॉ शांति चौधरी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।
- डॉ अरविंद श्रीवास्तव, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।
- श्री अजय यादव, प्रोपराइटर पार्वती हॉस्पिटल, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।
- श्री राजेश मिश्रा, चार्टर्ड एकाउंटेंट, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।
- श्री ऋषि कोहली, चार्टर्ड एकाउंटेंट, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।
- श्री संजय कुमार, वरिष्ठ अधिवक्ता, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।
- श्री बाबूराम यादव, वरिष्ठ अधिवक्ता इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।
- श्री गोपाल अरोरा, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।
- इंजी. संजीव गुप्ता, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।
- डॉ अनीता अग्रवाल एवं डॉ अजय अग्रवाल, बरेली, उत्तर प्रदेश।
- श्री रमेश लालवानी, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।
- श्री विजय केडिया, कानपुर, उत्तर प्रदेश।
- श्री विमल कुमार अग्रवाल, धनबाद, झारखंड।
- श्री कुलदीप धांड़ा, पंचकुला, हरियाणा।
- श्री मलकीत सिंह, लुधियाना, पंजाब।
- श्री एल के शर्मा, पंचकुला, हरियाणा।
- श्री नीलम जैन, राजनंदगांव, छत्तीसगढ़।
- श्री डीएल तिवारी, जबलपुर मध्यप्रदेश।
- श्री राजू गुप्ता, कटनी मध्य प्रदेश
- श्री अमित जायसवाल, इलाहाबाद, उ.प्र.

पुनर्वास मंडल

विनय श्रीवास्तव, अमित पांडेय, संजय द्विवेदी, दीपचंद्र गुप्ता, बंशीलाल पाल, शशिमणि गौतम, योगेश मिश्रा, अंकिमा मलहोत्रा, मोहम्मद वासे, वेद प्रकाश सिंह राजपूत, सत्येंद्र शर्मा, कमलेश सिंह, प्रीती सोनी, अजय मिश्रा, कफील अहमद, पवन पटेल, राहुल पाल, अर्चना त्रिपाठी, ऋतु सहाय, नीलेश श्रीवास्तव, घनश्याम पाल, विश्वमित्र पांडेय, शशि चौरसिया, गीतांजलि त्यागी, लवकुश प्रजापति, चंदन यादव, अभय सिंह, जय शंकर पाण्डेय, पूनम मिश्रा, कमलेश प्रजापति, रईस चन्द्र पाण्डेय, संजय पाण्डेय, रानी।

मुख्य उद्देश्य

- शारीरिक एवं मानसिक रूप से अक्षम, समाज के सभी वर्गों के विशेषतः सेरेब्रल पालसी से प्रभावित बच्चों को चिकित्सीय सहायता देकर पुनर्वासित करना ताकि वह सम्मानपूर्वक जी सकें।
- विभिन्न प्रकार की बाल अस्थि समस्याओं, मानसिक मंदता, नेत्रहीनता, सुनने व बोलने में समस्या आदि से प्रभावित बच्चों को इलाज एवं पुनर्वास की अत्याधुनिक सुविधा प्रदान करना।
- दिव्यांग बच्चों के अभिभावकों के लिए अल्पकालिक आवास के लिए सीपी होम की व्यवस्था करना।
- निशुल्क चिकित्सा शिविर, सीएमई, कार्यशालाएं और कॉफ्रेंस और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कराना।
- देश के विभिन्न भागों में सेरेब्रल पालसी एवं अन्य शारीरिक विकलांगता से प्रभावित बच्चों के लिए पुनर्वास केंद्र की स्थापना एवं उनको तकनीकि सहयोग प्रदान करना।
- दिव्यांग बच्चों के विकास के लिए शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना।
- दिव्यांगता के उन्मूलन के क्षेत्र में काम करने वाले विशेषज्ञों के लिए प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्र की स्थापना करना।
- अभिभावकों, सामाजिक और सरकारी संस्थाओं को उत्प्रेरित करना ताकि वह विशेष आवश्यकता के बच्चों की बेहतरी के लिए कार्य कर सकें।

त्रिशला फाउंडेशन द्वारा दी जा रही सेवाएं

(1) **त्रिशला एक्टिविटी सेन्टर (क्रिया–कलाप प्रशिक्षण केंद्र)** यह केन्द्र बच्चों को स्वावलाम्बी बनाने में सहायता करता है। यह केन्द्र दिव्यांग बच्चों को उनकी दिनचर्या का प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से शुरू किया गया है। इस केन्द्र में शारीरिक असुन्तलन को कम करने के लिए विशेष मशीनों द्वारा कसरत एवं गेट ट्रेनिंग की व्यवस्था की गई है।

(2) **त्रिशला अर्ली इन्टरवेंशन सेन्टर (कम आयु के सी0पी0 बच्चों का पुनर्वास केंद्र)** यह केंद्र पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों को सामान्य विकास तक पहुंचने में मदद करता है। इस केन्द्र पर एन0डी0टी0 एस0आई एवं विज़न इस्टुमिलेशन के तरीकों से बच्चों का पुर्नवास किया जाता है ।

(3) **त्रिशला रिहैब सेन्टर (दिव्यांग बच्चों के लिए शारीरिक व्यायाम एवं पुनर्वास केंद्र)** यहां आधुनिकतम तरीकों से थैरेपी के जरिए सीपी एवं अन्य प्रभावित बच्चों का पुनर्वास होता है।

(4) **त्रिशला स्पेशल एजुकेशन सेंटरः** यह केंद्र बच्चों को सामान्य स्कूलों में जाने के लिए तैयार करता है। इस केन्द्र पर सेरेब्रल पालसी एवं अन्य शारीरिक विकलांगता से प्रभावित बच्चो को विशेष शिक्षा, एकाग्रता बढाने की तौर-तरीकों एवं लिखने की कला कौशल में निपुण किया जाता है जिससे कि वे सामान्य स्कूलों में दाखिला पाकर पढ़ाई कर सकें।

त्रिशला फाउंडेशन द्वारा दी जा रही सेवाएं

(5) **त्रिशला स्पीच थैरेपी सेंटरः** यहां बोलने में असुविधा वाले बच्चों को प्रशिक्षित किया जाता है। यह केंद्र इन बच्चों में बोलने, लार टपकने और निगलने की समस्या को दूर करने का काम करता है।

(6) **त्रिशला सीपी होमः** सी०पी० बच्चों के अभिभावकों के लिए अस्थाई आवासीय व्यवस्था की गई है। जिसके कारण बाहर से आए हुए अभिभावक कुछ महीने ठहर कर अपने बच्चों का इलाज कराते हैं। यहां से थैरेपी केंद्रों तक आने जाने के लिए त्रिशला फाउंडेशन द्वारा वैन की सुविधा उपलब्ध कराई गई है।

(7) **त्रिशला मेडिकल एवं निरामया हेल्थ कार्डः** सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े परिवार के बच्चों के लिए चिकित्सीय सुविधा कार्ड की व्यवस्था की गई है। कार्डधारियों को न्यूनतम योगदान पर त्रिशला फाउंडेशन द्वारा निःशुल्क परामर्श एवं आजीवन चिकित्सा सुविधा दी जाती है। त्रिशला फाउंडेशन, नेशनल ट्रस्ट भारत सरकार की ओर से चलाई जा रही निरामया हेल्थ स्कीम हेतु मार्गदर्शन एवं सहायता प्रदान करता है।

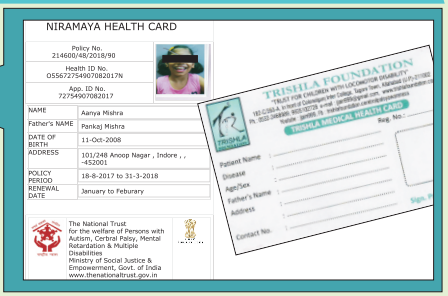
NIRAMAYA HEALTH CARD

Policy No. 214600/48/2018/90

Health ID No. 05567275490708201 7N

App. ID No. 72754907082017

NAME	Aanya Mishra
Father's NAME	Pankaj Mishra
DATE OF BIRTH	11-Oct-2008
ADDRESS	101/248 Anoop Nagar , Indore , , -452001
POLICY PERIOD RENEWAL DATE	18-8-2017 to 31-3-2018 January to Feburary

The National Trust for the welfare of Persons with Autism, Cerbral Palsy, Mental Retardation & Multiple Disabilities
Ministry of Social Justice & Empowerment, Govt. of India
www.thenationaltrust.gov.in

TRISHLA FOUNDATION

TRISHLA MEDICAL HEALTH CARD

Reg. No.:

Patient Name
Disease
Age/Sex
Father's Name
Address
Contact No.

(8) **विस्तार एवं पंजीकरण :** यहां पुनर्वास और प्रशिक्षण के लिए केवल भारत ही नहीं वरन् दुनिया के विभिन्न देशों जैसे नेपाल, बांग्लादेश, कीनिया, घाना, मलावी, ब्रिटेन, यूएसए इत्यादि से लोग आ रहे हैं। त्रिशला फाउंडेशन में सभी बच्चों का पंजीकरण एवं सामान्य जानकारी दर्ज की जाती है। इससे बच्चों के पुनर्वास और अन्य सहायता कार्यक्रम के लिए जरूरी दस्तावेज जुटाने में मदद मिलती है।

त्रिशला फाउंडेशन द्वारा दी जा रही सेवाएं

(9) **थैरेपिस्ट एवं अभिभावक प्रशिक्षणः** सेरेब्रल पालसी बच्चों के इलाज में अभिभावकों की मुख्य भूमिका को देखते हुये उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है जिससे की वो अपने बच्चों की कसरत वापस घर जा कर सुचारू रूप से कर सके। त्रिशला फाउंडेशन में नियमित तौर पर विशेषज्ञों, थेरेपिस्ट्स, सामाजिक कार्यकर्ताओं और अभिभावकों के लिए चिकित्सा कार्यशाला एवं प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता है।

(10) **शिविर :** देश के विभिन्न भागों में दिव्यांग बच्चों के लिए निःशुल्क परीक्षण, परामर्श एवं जन-जागरूकता शिविर का आयोजन नियमित तौर पर किया जाता है। इन कैंपों का आयोजन देश के विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से मिल कर किया जाता है।

(11) **सामाजिक गतिविधियांः** त्रिशला फाउंडेशन नियमित रूप से इन बच्चों और उनके परिवारों के लिए सामाजिक गतिविधियां जैसे होली मिलन, व्हीलचेयर क्रिकेट, माघमेला कैंप, नव वर्ष पर पिकनिक का आयोजन करता रहता है ताकि यह बच्चे स्वयं को समाज का अंग समझ सकें।

(12) **राष्ट्रीय सम्मेलन एवं सीएमई :-** त्रिशला फाउंडेशन के द्वारा समय-समय पर देश के विभिन्न भागों में राष्ट्रीय संगोष्ठी, कान्फ्रेन्स एवं कार्यशाला का आयोजन किया जाता रहा है। इलाज़ के क्षेत्र में सक्रिय लोगों के लिए नियमित अवसर पर कार्यशाला एवं संगोष्ठी का आयोजन किया जाता है। २०१६ व २०१७ में भी इलाहाबाद में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

विज़न 2025

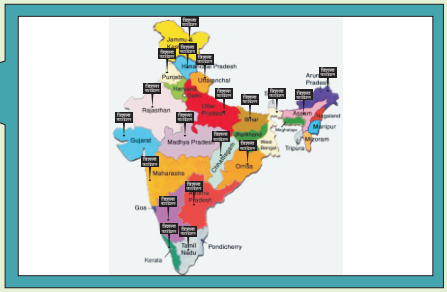

सेरेब्रल पालसी जीवनपर्यंत रहने वाली समस्या है। यह समस्या आदि काल से चली आ रही है और निकट भविष्य में इसके खात्मे की कोई गुंजाइश नजर नहीं आ रही है। इसकी भयावहता और विस्तार को देखते हुए इस पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से सरकारें तमाम योजनाओं पर कार्य कर रही हैं। इनमें गर्भावस्था के समय मां की समुचित देखभाल पर पहले से ही बहुत काम हो रहे हैं, कम उम्र एवं कम वजन के बच्चों को अच्छी चिकित्सीय सुविधाएं देने से उनको नया जीवन देने में बहुत कामयाबी मिली है, परंतु ऐसे बच्चों में सेरेब्रल पालसी की संभावना ज्यादा होने की वजह से प्रभावित बच्चों की संख्या लगातार बढ़ती चली जा रही है। पिछले 12 साल में हमारे अथक प्रयास से देश के विभिन्न प्रदेशों में जन जागरूकता कार्यक्रम के आयोजित होने और तमाम संचार माध्यमों से जन जागरूकता बढ़ी है। हजारों बच्चों को पुनर्वास की विभिन्न सुविधाओं का लाभ दिया गया हैं। जिसकी वजह से त्रिशला फाउंडेशन के केंद्रों पर प्रति माह आने वाले ऐसे बच्चों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। अब देश के लगभग सभी प्रांतो एवं विश्व के कई अन्य देशों से सेरेब्रल पालसी से प्रभावित बच्चे संस्थान में इलाज के लिए लगातार बड़ी संख्या में आ रहे हैं। अब इन सभी को ध्यान में रखते हुए 2025 तक एक ऐसे अत्याधुनिक केंद्र की आवश्यकता है जिसमें देश-विदेश से आए हुए मरीजों के इलाज की व्यवस्था हो सके। विश्वस्तरीय पुनर्वास की व्यवस्था, आर्थोटिक वर्कशॉप, समेकित स्कूल की स्थापना की जा सके। जिससे निकट भविष्य में ज्यादा से ज्यादा बच्चों एवं उनके परिवार को सभी सुविधाओं और अनुसंधान का लाभ दिया जा सके। हमारा प्रयास है कि 2025 तक हमारा संस्थान इतना विकसित हो कि जिससे कोई भी सेरेब्रल पालसी बच्चा इलाज से वंचित न रहे।

प्रस्तावित योजना : त्रिशला सीपी गांव

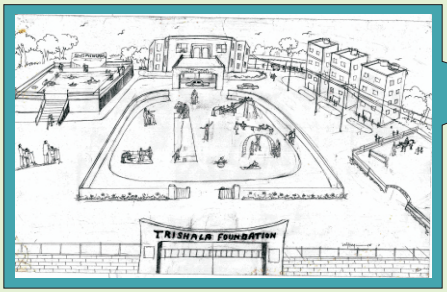

वर्तमान समय में हमारे देश विशेषतया उत्तर प्रदेश में शारीरिक अक्षमता एवं सेरेब्रल पालसी से प्रभावित बच्चों के समुचित इलाज एवं पुनर्वास के लिए समग्र एवं अत्याधुनिक केंद्र की व्यवस्था नहीं है। जबकि पूरे उत्तर भारत में ऐसे बच्चों की संख्या बहुत ज्यादा है। त्रिशला फाउंडेशन एक ऐसे केंद्र की स्थापना करना चाहता है जिसमें विश्व के किसी कोने से आए हुए ऐसे बच्चों को बिना किसी भेदभाव के एक ऐसे पुनर्वास की सुविधा उपलब्ध कराई जाए जिसमें बच्चों के साथ आए हुए उनके परिवार एक जगह रूककर बच्चों का इलाज एवं पुनर्वास कर सकें, उनकी दिनचर्या एवं पुनर्वास के नए-नए तौर तरीकों में प्रशिक्षण हो सके एवं ऐसे बच्चों की शुरूआती पढ़ाई-लिखाई की व्यवस्था हो सके जिससे की वो बच्चे वापस अपने घर जाकर सामान्य बच्चों की तरह पढ़-लिख कर अपने पैरों पर खड़े हो पाएं। हम लोग इन सभी सुविधाओं को कई चरणों में बनाने की व्यवस्था कर रहे हैं।

हमारा उद्देश्य है कि ऐसे बच्चों की जरूरतों के अनुसार चिकित्सीय, व्यवसायिक एवं पुनर्वास की सुविधा, पढ़ाई-लिखाई, खेलकूद और कुछ महीने रूकने की व्यवस्था अच्छे वातावरण में हो सके। इसी परिकल्पना पर आधारित हमारा पुनर्वास केंद्र सभी तरह के अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस होने के साथ-साथ विश्वस्तरीय होगा।

प्रथम चरण : 2018 से शुरू, सीपी होम और अत्याधुनिक पुनर्वास केंद्र की स्थापना।
द्वितीय चरणः 2020 से शुरू, आर्थोटिक वर्कशॉप और समेकित शिक्षा के लिए विद्यालय।
तृतीय चरणः 2025 से शुरू, प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्र एवं खेल के मैदान की स्थापना।

समाज से अपील

समाज से अपील : दिव्यांगजनों के लिए त्रिशला फाउंडेशन असाधारण कार्य करने वाली एक समाजसेवी संस्था है। हम अब तक बिना किसी सरकारी या गैर सरकारी सहायता के अपने संसाधनों से संस्था चला रहे हैं, किंतु इस प्रस्तावित योजना को क्रियांवित करके इन बच्चों का भविष्य बनाने के लिए सभी के सहयोग की आवश्यकता है। इस प्रकार यदि हम एकजुट हो जाएं तो विकसित देशों के समान बेहतर सुविधाएं दे सकते हैं। अतः आइए सीपी बच्चों के समेकित विकास के लिए मिलकर काम करें।

आप अपना अनुदान रेखांकित चेक या NEFT/RTGS द्वारा निम्न बैंक खाते में कर सकते हैं। आपके द्वारा दिया गया अनुदान भारतीय आयकर अधिनियम की धारा ***80G*** के तहत कर से छूट योग्य है। (order no.ITBA/EXM/S/80G/2017-18/1004818712(1) Dated 05/07/2017)

A/c Name : Trishla Foundation, **A/c No.** 520141001006246, **IFSC :** CORP0000533
Bank Name: Corporation Bank, George Town Allahabad.
MICR : 211017003, **PAN :** AACTT6054H

त्रिशला फाउंडेशन

मानसिक एवं शारीरिक दिव्यांगता से प्रभावित बच्चों के लिए समर्पित संस्था

त्रिशला अर्ली इंटरवेंशन सेंटर
182 बी, टैगोर टाउन,
इलाहाबाद - 211002 (उ.प्र.) भारत
फोन- 9415014994,
9918191062

कार्यालय एवं त्रिशला रिहैब सेंटर
182ए/350सी, टैगोर टाउन,
इलाहाबाद - 211002 (उ.प्र.) भारत
फोन- 9935209951

त्रिशला ऐक्टिविटी सेंटर
77/202/1, टैगोर टाउन,
इलाहाबाद - 211002
(उ.प्र.) भारत,
फोन- 0532-2465100

त्रिशला सीपी होम
61-1, शुक्ला मार्केट,
चाँदपुर सलोरी,
इलाहाबाद (उ.प्र.)
फोन- 9935102728

www.trishlafoundation.com jjain999@gmail.com YouTube jjain999 trishlafoundation.cerebralpalsyawareness

– पंजीकृत –

- सब रजिस्ट्रार कार्यालय इलाहाबाद *(पंजी. No. 343/12-08.082014)*
- दिव्यांगता कल्याण विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार *(3359/2016-17)*
- नेशनल ट्रस्ट, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार
- एनजीओ दर्पण, नीति आयोग, भारत सरकार